International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 11, November 2022
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

समकालीन हिन्दी कहानी में आदिवासी स्त्री जीवन

डॉ॰ गुरनाम संह
एसो॰ प्रोफेसर हिन्दी- वभाग
आई॰बी॰ (पी॰जी॰) महा वद्यालय,पानीपत

स्त्री को लेकर भारतीय समाज अंत र्वरोधों से भरा हुआ है। एक तरफ देश में स्त्री को पूजनीय माना जाता है तो दूसरी तरफ इस देश में स्त्री सबसे जयादा शारीरिक एवं मान सक हिंसा का शकार होती है। पुरुष प्रधान समाज होने के कारण स्त्री जीवन के व्यक्तिगत एवं सामाजिक निर्णय पुरुष ही लेते हैं। स्त्री क्या पहनेगी, क्या पढ़ेगी या नहीं पढ़ेगी, ववाह कससे करेगी जैसे स्त्री के व्यक्तिगत जीवन के निर्णय को भी पुरुष ही लेता है। भारतीय समाज में स्त्री पता और पति की छाया में ही जीती है मानो उसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही न हो । भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति में काफी सुधार आया है। वर्तमान में स्त्री की स्थिति पहले की तरह द् वतीय स्तर के प्राणी की ही नहीं रह गई है। आज स्त्रियाँ अपने अ धकारों को पहचानती हुई अपने हक के लए कड़ा संघर्ष कर रही है। आधी आबादी मानी जाने वाली स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही है। वर्तमान में बहुत संगठन स्त्रियों के अ धकारों, सुरक्षा, स्वास्थ्य आदि पर वमर्श करते है। ले कन ठीक इसके वपरीत एक ही राष्ट्र और समाज में आदिवासी स्त्रियों के अ धकारों, सुरक्षा, स्वास्थ्य आदि पर वमर्श करते है। ले कन ठीक इसके वपरीत एक ही राष्ट्र और समाज में आदिवासी स्त्रियों की स्थिति में कोई वशेष

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सुधार नहीं हुआ। आदिवासी स्त्रियों भी सदियों से शो षत होती आ रही है। भारतीय समाज और संस्कृति की तुलना में आदिवासी स्त्रियाँ आरम्भ से ही स्वतंत्रता और स्वच्छन्द है। चाहे प्रेम करने की स्वतन्त्रता हो या वर के चयन की स्वतंत्रता ये स्त्रियाँ स्वावलम्बी होने के साथ-साथ आत्मनिर्भर भी है। आदिवासी समाज में ये स्त्रियाँ, पुरुष के समान मेहनत कर अपने परिवार का भरण-पोषण करने में सक्षम हैं। इतनी सक्षमता और आत्मनिर्भरता होने के साथ भी आदिवासी स्त्री जीवन की यथार्थ में कारू णक त्रासदी कदम-कदम पर मुँह बाँये खड़ी है।

यह सक्के का एक पहलू है ले कन इसके बावजूद उनके अपने आदिवासी समाज में कुछ ऐसे नियम और कानून है जो स्त्री को पुरुष से कमतर आँकने के लए बनाये गए है। आदिवासी स्त्रियों का सामाजिक जीवन मुख्यधारा के समाज द्वारा भी शो षत और प्रता ड़त होता आया है। इस शोषण और प्रताड़ना में आ र्थक अभाव, अ शक्षा, अन्ध वश्वास में आदिवासी स्त्री जीवन पीड़ा के साथ-साथ संघर्ष को भी अ भव्यक्त करता है। आदिवासी समाज में लड़की के होने पर परिवार वाले खु शयाँ मानते हैं। आदिवासी समाज में बेटी का जन्म होने से घर के धन-दौलत में वृ द्ध होती है। ले कन हिन्दू समाज की तरह आदिवासी समाज में लड़का और लड़की होने पर भेदभाव नहीं कया जाता । आदिवासी समाज में दोनों को बराबर महत्त्व दिया जाता है। इस बराबरी के महत्त्व को यदि साहित्य के माध्यम से पढ़े और समझे तो स्त्री के जीवन में पीड़ा के साथ संघर्ष भी जन्म से लेकर जीवन पर्याप्त तक हर समाज और राष्ट्र में एक जैसा ही होता है। महेरुन्निवसा परवेज का जन्म और बचपन आदिवा सयों के बीच हुआ और गुजरा है। उन्होंने आदिवासी जीवन को बहुत करीब से देखा ही नहीं बल्कि जिया भी है इस लए उनके साहित्य में आदिवासी समाज मौजूद है। उनकी अ धक कहानियाँ आदिवासी स्त्री जीवन पर केन्द्रित है। उनकी 'जंगली हिरनी' [1] कहानी आदिवासी लड़की के जीवन पर केन्द्रित होने के साथ-साथ

लच्छो और उसकी माँ के यथार्थ को भी व्यक्त करती है। चाहे वे कतनी ही स्वावलम्बी क्यों न हो । उसके स्वावलम्बी होने के यथार्थ को व्यक्त करती है।

मेहरुन्निसा परवेज की कहानी 'कानीबाट' [2] में दुलेसा और उसकी माँ जंगलों में काम करती है और उसका पति खेतों में काम करता है। वह और उसकी माँ जंगलों से लकड़ी काटना, बोड़ा लाना, मछ लयाँ पकड़ना आदि कार्य करती है साथ ही मुर्गी पालन का कार्य भी करती है। कहानी ले खका ने इस कहानी में आदिवासी स्त्री जीवन की संघर्षमय परिश्रम का यथार्थरूप में वर्णन करते हुए उनके स्वावलम्बी और आत्मनिर्भरता पर भी प्रकाश डाला है। 'शनाख्त' [3] कहानी में बत्ती का बाप शराबी है। वह उनके साथ नहीं रहता है। कभी-कभी आता है। ऐसी स्थिति में बत्ती की माँ और वह घर-घर अण्डे बेचकर अपनी गृहस्थी चलाते है। माँ-बेटी अभावग्रस्त जीवन जीती है। वडम्बना यह भी है क सेक्स का भूखा बाप बेटी को ही वासना का शकार बनाना चाहता है। पारिवारिक वघटन की घोर वडम्बना कहानी में यथार्थ रूप में प्रकट हुई ।

राकेश वत्स की कहानी 'अवशेष' [4] में आदिवासी स्त्री जंगल में पकनिक मनाने आये चार सम्पन्न व्यक्तियों को सू चत करने आती है क उनका ड्राइवर दुर्घटना ग्रस्त हो गया है ले कन उन्हें अपने ड्राइवर की चन्ता नहीं है। वह सब शराब के नशे में मस्त है। शराब के नशे में खड़े गुप्ता जी ने उसे रोक लया, "अ हु हु हु इस तरह से नहीं अब आई है तो कुछ औरत जाति होने का फर्ज निभाती जाओ ।"[5] वे आदिवासी को शराब पीने के लए कहते है । इन सब बातों से स्त्री को उन लोगों को धूर्तता का पता चलता है। शर्मा जी की नजर मे आदिवा सयों की अह मयत शून्य थी। उनका मानना था क आजादी से पहले ये आदिवासी स्त्रियाँ अपनी अस्मिता सस्ते में लुटा देती थीं और अब केवल कुछ पैसों के लए, कहानी में तथाक थत सभ्य

लोगों का मकसद पूरा नहीं हो पाता। क्यों क उनकी सोच के वपरीत आदिवासी स्त्री अपनी आत्मचेतना और अस्तित्व बोध के प्रति सजग और सतर्क है। अरुण प्रकाश की कहानी 'बेला एक्का लौट रही है' में आदिवासी स्त्री के संघर्ष का चत्रण कया है। बेला कड़ी मेहनत से उच्च शक्षा प्राप्त करती है और उसकी एकमात्र इच्छा है एक अच्छी सी नौकरी प्राप्त करना जिससे वह अपना और अपने परिवार की स्थिति को सुधार सके । उसे आदिवासी इलाके से दूर बेगूसराय के पास एक स्कूल में नौकरी मलती है तो वह बहुत खुश हो जाती है ले कन बेला की यह खुशी ज्यादा दिन की नहीं होती क्यों क उसे नौकरी ज्वाइन करते ही पता चलता है क कम्पनी के जन कल्याण अ धकारी जगदीश संह वहां की सारी अध्या पकाओं के साथ असामान्य व्यवहार करता है। यही व्यवहार बेला के साथ होता है। यहाँ तक चपरासी भी बेला से भद्दे मजाक करता है, "मैडम भी पहले संह जी से पढ़ लो फर बच्चों को पढ़ाना।"[6] वह जगदीश संह के खलाफ चीफ क मश्नर ऑफ शडड्यूल्ड कास्ट एण्ड ट्राइब्स से शकायत करती है, पर जाँच कमेटी के सामने सारी अध्या पकाएँ कल्याण अ धकारी के डर से अपना मुँह खोल नहीं पाती है। बेला एक्का इन वषम परिस्थितियों का सामना नहीं कर पाती और नौकरी छोड़ने का फैसला कर लेती है।

आदिवासी समाज में लड़की के भागने पर उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता है, "पहली बार गाँव वाले भागी हुई लड़की को पकड़कर लाते है ओर उसे खूब मारते हैं, बाँध देते है। लड़की मौका पाकर फर भाग जाती है, दूसरी बार उसे पकड़कर लाते हैं और उसे आग से दांगते है, मारते हैं। तीसरी बार यदि लड़की फर भाग जाती है, तो गाँव वाले उसे पकड़कर लाते हैं और एक पैर चक्के के बीच डाल देते हैं या बाँध देते है। उसके बाद उसे तेजी से घुमते हैं। लड़की पीड़ा से चीखती है, उसका पैर सूज जाता है और वह कष्ट से बुरी तरह चल्लाती है और बेहोश हो जाती है।"[7] इस प्रकार आदिवासी लड़ कयों को शारीरिक और मान सक दोनों प्रकार के दण्ड भुगतना

पड़ता है। इस दण्ड की प्र क्रया में कई लड़ कयाँ इस कष्ट को सहन भी कर लेती हैं और फर मौका पाकर भाग जाती है। इस बार गाँव वाले स्वयं उसे उसके प्रेमी के पास पहुँचा देते है जिस प्रकार कहा जाता है क आदिवासी स्त्रियों को अपने समाज में प्रेम करने और शादी करने की स्वतंत्रता होती है ले कन वहीं कई आदिवासी समाज ऐसे भी हैं जहाँ लड़ कयों को प्रेम और शादी करने की स्वतंत्रता नहीं है और ऐसा करने पर उन्हें असहनीय दण्ड भी भुगतना पड़ता है। यह कहानी हमारे उस भ्रम को तोड़ती है क आदिवासी स्त्रियों को प्रेम और ववाह करने की स्वतंत्रता होती है। लम्बी संस्कृति की परम्परा कोई भी हो उसमें कुप्रथाएँ, कुरीतियाँ अपने तरह के कर्मकांड और अन्ध वश्वास पनपते हैं। आदिवासी समाज भी इनसे मुक्त नहीं है। अन्य समाज की अपेक्षा आदिवासी समाज में अन्ध वश्वास की प्रधानता है। इस अन्ध वश्वास के केन्द्र में आदिवासी स्त्री । आदिवासी स्त्री जीवन की पीड़ा और संघर्ष के यथार्थ को समकालीन कहानी में स्थान मला है। जहाँ आदिवासी स्त्री का स्वतंत्र, स्वच्छन्द और आत्मनिर्भर रूप हो या प्रेम करने या फर वर चुनने की आजादी को चत्रित कया है वहीं उनका स्वयं का समाज बहु ववाह-प्रथा, डायन-प्रथा, प्रेम करने पर शारीरिक-मान सक दण्ड, देह, व्यापार आदि द्वारा उसको शो षत और प्रता ड़त कर रहे हैं। आदिवासी स्त्री को दोहरे शोषण का शकार होना पड़ता है। एक तो स्त्री होने के कारण और दूसरे आदिवासी स्त्री होने के कारण वह अपने ही समाज के अ धकारों से वं चत है। इसके लए जरूरी है सरकार और समाज का स क्रय सहयोग। वस्तुतः इस स क्रय सहयोग से ही आदिवासी समाज और आदिवासी स्त्रियों का वकास होगा ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. जंगली हिरनी, मेहरुन्निसा परवेज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ॰ 50

2. कानीबाट, फाल्गुनी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

3. शनाख्त, आदम और हवस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

4. अवशेष, इन हालात में, राकेश वत्स, नेशनल पब्लि शंग हाऊस, दिल्ली, 1991, पृ॰ 98

5. वही

6. भैया एक्स प्रेस: अरूण प्रकाश, आयाम प्रकाश, दिल्ली, 1992, पृ॰ 12

7. मेरी बस्तर की कहानियाँ, मेहरुन्निसा परवेज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ॰ 113

शब्दकोश: वर्धा हिंदी शब्दकोश, संपादक राम प्रकाश सक्सेना, 2018

समाचार पत्र: हरिभू म - 17 फरवरी, 2023, पृ॰ 6